RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 9 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

मार्च 2025

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

साहित्य गोष्ठी व सम्मान... विस्तृत खबर @ पेज 18

राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कॉर्स
RKCL का अधिकृत ज्ञान केंद्र
डिजिटल राजस्थान की ओर एक सशक्त कदम
उपलब्ध कॉर्सेज RS-CIT, Tally, DTP, PGDCA
सन शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा, राजसमंद. मो. 96498 13798
फैक्ट्री चौराहा, बस स्टैंड के पास गांवगुड़ा, खमनोर, राजसमंद, मो. 90240 34696

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

भारत सरकार और राजस्थान सरकार की कल्याणकारी योजनाओं
की अपडेट जानकारी के लिए विजिट करें

www.sarkarifayada.com

शक्ति स्पोर्ट्स

NIVIA VICKY COSCO SPORTS | FITNESS Reebok

सभी प्रकार
की खेलकूद सामग्री
मिलने का
राजसमंद में एकमात्र
विश्वसनीय स्थान

स्पोर्ट्स व GYM
आइटम होलसेल
रेट पर उपलब्ध है।

TLM सामग्री, दरी पट्टी,
भोजन पट्टी, अग्निशमन यंत्र,
लेक्टोमीटर, ट्रॉफी मोमेंटो, टी-शर्ट, लोवर,
विज्ञान प्रयोगशाला,
भूगोल प्रेक्टिकल सामग्री, पुस्तकालय की उपयोगी
पुस्तकों सहित सभी प्रकार के
सरकारी स्कूल की सामग्री उपलब्ध

शॉप नं. 10-11, शास्त्री मार्केट, कांकरोली जिला-राजसमंद
फोन नं. 02952-225137, 9414473275

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र

Tally, DTP, PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

सम्पादकीय सहयोगी
परमेश्वरसिंह चुंडावत

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

सम्पादकीय

होली खेलना सिर्फ फॉर्मलिटी?

होली, रंगों और उल्लास का त्योहार, सदियों से भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। यह पर्व न केवल बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, बल्कि प्रेम, सौहार्द और एकता का भी संदेश देता है। परंतु बदलते समय के साथ, क्या होली का सार भी खोता जा रहा है? क्या यह रंग लगाना और एक-दूसरे को शुभकामनाएं देना मात्र एक औपचारिकता बनकर रह गया है?

आजकल होली का स्वरूप बदल चुका है। पहले जहां लोग मोहल्लों में एकजुट होकर रंग-गुलाल से खेलते थे, वहीं अब यह त्योहार सोशल मीडिया पर स्टेटस और सेल्फी तक सीमित हो गया है। पारंपरिक फाग, रसिया और होली गीतों की जगह डीजे साउंड्स और वॉटर गन ने ले ली है। आधुनिक जीवनशैली और व्यस्त दिनचर्या ने भी होली के उत्साह को प्रभावित किया है। अब त्योहार को मनाने की बजाय लोग इसे एक छुट्टी के रूप में देखने लगे हैं। होली के बहाने लोग वीकेंड ट्रिप या पार्टियों की प्लानिंग करने लगे हैं, जिससे त्योहार का मूल

इसके अलावा, रंगों और पानी की बर्बादी को लेकर भी चिंता बढ़ी है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ने के साथ लोग होली खेलने से बचने लगे हैं। हालांकि, इस समस्या का समाधान प्राकृतिक रंगों और जल संरक्षण के साथ भी किया जा सकता है। यह भी सच है कि कई लोग रंगों के बहाने एक-दूसरे को परेशान करने का प्रयास करते हैं, जिससे त्योहार की पवित्रता पर सवाल खड़े होते हैं। इस तरह की घटनाएं होली के सकारात्मक संदेश को धूमिल कर देती हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि होली की भावना पूरी तरह समाप्त हो गई है। आज भी कई स्थानों पर पारंपरिक होली का उत्साह देखा जा सकता है। वृंदावन और बरसाना की लट्ठमार होली, काशी की रंगभरी एकादशी और राजस्थान के पुष्टिमार्ग मंदिरों में होने वाली होली उत्सव, सच्चे रंग और भक्ति का उदाहरण हैं।

हमें आवश्यकता है कि हम होली को पुनः उसकी मूल भावना के साथ मनाएं। इसे सिर्फ औपचारिकता न मानकर, दिल से इस उत्सव में शामिल हों। एक-दूसरे को प्रेम और आदर से रंग लगाएं, पुराने गिले-शिकवे भूलकर अपनापन दर्शाएं। तभी होली का असली आनंद और उद्देश्य सार्थक होगा। होली केवल रंगों का नहीं, बल्कि रिश्तों को संजोने और नई ऊर्जा के साथ जीवन में उत्साह भरने का पर्व है। इसे औपचारिकता से बाहर निकालें और दिल से जीएं। यही सच्ची होली होगी।

लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ पत्रकार, जयवर्द्धन न्यूज
मो. 9672980901

मेवाड़ वागड़ चैलेंजिंग होली

होली का त्योहार यूं तो पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है, लेकिन मेवाड़ और वागड़ में इसकी अपनी अलग ही पहचान है। जहां बाकी जगह लोग गुलाल और अबीर से खेलते हैं, वहीं यहां होली कुछ ज्यादा ही गंभीर और धुआंधार हो जाती है। यहां गुलाल, अबीर, पानी की बौछार के अलावा बड़े ही चैलेंजिंग तरीके से होली खेलने की बहुत ही पौराणिक परम्परा है, जो चुनौतिपूर्ण भी है और लोगों को अचंभित भी करती है।

मेवाड़ और वागड़ की होली में रंगों के साथ-साथ परंपराओं और उत्साह का भी रंग चढ़ा होता है। यहां होली सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक अंदाज है। लोग रंगों में सराबोर होकर हर गिले-शिकवे भूल जाते हैं और बंदूक, अंगारों, लाठियों और कपड़ों के युद्ध में भी प्रेम और अपनापन झलकता है। तो अगली बार जब आप होली खेलने की सोचें, तो मेवाड़ और वागड़ की इन अद्भुत परंपराओं को भी अनुभव करने की योजना बनाएं।

मेनार में बंदूकों की सलामी

मेनार गांव में होली का मतलब सिर्फ रंग नहीं, बल्कि बारूद की खुशबू भी है। यहां की होली में रंगों के साथ बंदूकों की सलामी दी जाती है। ऐसा लगता है जैसे किसी ने होली के बहाने पूरे गांव को आर्मी ट्रेनिंग पर भेज दिया हो। बंदूक चलाने की यह परंपरा इतनी लोकप्रिय है कि लोग कान में रुई डालकर भी भागते नहीं, बल्कि सामने खड़े होकर धुआं-धक्कड़ का लुत्फ उठाते हैं।

वागड़ में अंगारों पर चलने की होली

वागड़ में होली खेलना किसी एडवेंचर स्पोर्ट्स से कम नहीं। यहां लोग जलते अंगारों पर चलते हैं, और इसे देखकर अग्निपथ फिल्म के अमिताभ बच्चन भी सोच में पड़ जाएं। ऐसा मान लिया जाता है कि जिसने अंगारों पर चलने की परीक्षा पास कर ली, वह दुनिया में किसी भी समस्या को अंगारों की तरह रौंद सकता है।

कपड़ा फाड़ होली

मेवाड़ की कपड़ा फाड़ होली भी दिलचस्प है। इस होली में रंग खेलने के बाद, जैसे ही जोश सातवें आसमान पर पहुंचता है, लोग एक-दूसरे के कपड़े फाड़ने लगते हैं। यहां कपड़ों का फटना और आत्मा का मुक्त होना, दोनों को एक ही श्रेणी में रखा जाता है। अगर किसी के कपड़े सलामत रह गए तो समझिए उसकी होली अधूरी रह गई। यह आदिवासी बहुल क्षेत्र में खेलते हैं।

लठ मार होली

लठ मार होली की परंपरा भी कम दिलचस्प नहीं है। यहां महिलाएं पुरुषों को लाठियों से पीटती हैं और पुरुष भी इतने समर्पित होते हैं कि पिटाई को भक्ति भाव से सहन करते हैं। इस परंपरा को देखकर हर साल कुछ फिल्म डायरेक्टर जरूर सोचते होंगे कि अगली एक्शन फिल्म की शूटिंग यहीं कर ली जाए।

देवर-भाभी की होली

असली मसालेदार होली होती है। यहां देवर और भाभी के बीच तंज, मजाक और छेड़छाड़ का ऐसा खेल चलता है कि देख कर सास भी अपनी जवानी के दिनों को याद कर लेती है। देवर के चेहरे पर जितने रंग लगते हैं, उससे ज्यादा रंग उसके आत्म-सम्मान पर लग जाते हैं। यह शहर से लेकर गांवों में आज भी खेली जाती है।

कोड़े मार होली

मेवाड़ में कोड़े मार होली भी खूब प्रचलित है। गांव के चौराहे पर रंग गुलाल मिलाकर बड़े कड़ावे में पानी भर दिया जाता है। फिर युवा उसमें पानी लेने आते हैं, तभी भाभियां कोड़े मारकर भगाती है। उस कड़ावे से पानी ले जाना युवाओं के लिए बड़ा चैलेंजिंग और जोखिमभरा रहता है।

पत्थर मार खूनी होली

डूंगरपुर जिले के भीलूडा में पत्थर मार खूनी होली खेली जाती है। बरसाने की लठ्ठमार होली से भी खतरनाक पत्थरमार होली खेली है। होली पर्व पर रंगों के स्थान पर एक दूसरे पर पत्थर बरसा कर खून बहाने को शगुन मानते हैं। इसे स्थानीय बोली में 'पत्थरों की राड़' कहते हैं। 400 से 500 लोग रघुनाथ मंदिर परिसर में एकत्रित होते हैं। मजे की बात है कि इसके लिए डॉक्टरों की टीम मौजूद होती है। गंभीर घायल का तत्काल इलाज करते हैं।

अनोखे अंदाज में होली मनाने की परम्परा

होली, रंगों और उल्लास का त्योहार, भारत के हर कोने में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। देश की विविध सांस्कृतिक विरासत इस त्योहार को अनोखे अंदाज में रंग देती है। हर राज्य में होली का एक अनोखा रंग और अंदाज देखने को मिलता है, जो इस पर्व को और भी खास बनाता है। यदि आप कभी इन स्थानों पर होली के समय जा सकें, तो भारतीय संस्कृति के इस रंगीन पर्व का वास्तविक आनंद उठा सकते हैं। **आइए जानते हैं देश के उन स्थानों के बारे में, जहां होली की अलग ही छटा देखने को मिलती है।**

1. बरसाना और नंदगांव की लट्ठमार होली

उत्तरप्रदेश के बरसाना और नंदगांव में होली का मतलब है लट्ठमार होली। यहां महिलाएं पुरुषों को लाठियों से पीटती हैं और पुरुष इसे सहन करते हुए रंग-गुलाल में सराबोर हो जाते हैं। इस परंपरा की जड़ें राधा-कृष्ण की प्रेम लीला में जुड़ी हैं। यह होली पूरे देश में अपनी अनूठी पहचान रखती है।

2. वृंदावन और मथुरा की फूलों की होली

वृंदावन और मथुरा में होली के रंगों के साथ-साथ फूलों की वर्षा भी होती है। बांके बिहारी मंदिर में भक्तजन भगवान कृष्ण और राधा को पुष्प अर्पित करते हैं और एक-दूसरे पर फूलों की बौछार करते हैं। यह नजारा अत्यंत भक्तिमय होता है।

3. शांती निकेतन की सांस्कृतिक होली

पश्चिम बंगाल में शांति निकेतन की होली को बसंत उत्सव के रूप में मनाते है। इसे रवींद्रनाथ टैगोर ने लोकप्रिय बनाया। यहां पारंपरिक नृत्य, संगीत और रंगों के साथ कला और संस्कृति का उत्सव मनाया जाता है।

4. मेवाड़ की राजसी होली

राजस्थान के उदयपुर में मेवाड़ के महाराजा की अगुवाई में होली मनाई जाती है। सिटी पैलेस में राजसी ठाठ के साथ होलिका दहन होता है, जिसमें पारंपरिक वेशभूषा में सजे लोग हिस्सा लेते हैं। इसके बाद रंगों और गुलाल से होली खेली जाती है।

5. वागड़ की अंगारों पर चलने की होली

राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा में लोग जलते अंगारों पर चलकर होली मनाते हैं। यह साहस और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। इस अनोखी परंपरा को देखने के लिए दूर-दूर से लोग यहां आते हैं।

6. मनिपुर की याओसांग होली

मनिपुर में होली को याओसांग के रूप में मनाया जाता है। यहां थाबल चोंगबा नामक नृत्य का आयोजन होता है, जिसमें पुरुष और महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में लोक नृत्य करते हैं। रंगों के साथ संगीत और उत्साह का यह संगम देखने लायक होता है।

7. पंजाब की होला मोहल्ला

पंजाब में आनंदपुर साहिब में सिख समुदाय द्वारा होला मोहल्ला मनाया जाता है। यह होली के अगले दिन मनाया जाता है, जिसमें मार्शल आर्ट, घुड़सवारी और परंपरागत युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया जाता है।

8. बिहार की भांग वाली होली

बिहार में ठंडाई में भांग मिलाकर पी जाती है और लोग उत्साह के साथ रंग-गुलाल खेलते हैं। होली के पारंपरिक गीत और चुटीले मजाक इस होली को और भी खास बना देते हैं।

9. काशी की रंगभरी एकादशी

वाराणसी में होली का उत्सव रंगभरी एकादशी से शुरू होता है। इस दिन काशी विश्वनाथ का विशेष श्रृंगार किया जाता है और श्रद्धालु रंग-गुलाल खेलते हैं। यह आयोजन अद्वितीय भक्ति भाव को प्रकट करता है।

10. महाराष्ट्र की मटकी फोड़ होली

महाराष्ट्र में होली के बाद मटकी फोड़ने की परंपरा होती है, जिसे 'दही हांडी' भी कहा जाता है। इसमें गोविंदा टोलियां एक के ऊपर एक चढ़कर दही से भरी मटकी फोड़ने का प्रयास करती हैं। यह भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं की झलक प्रस्तुत करता है।

11. गुजरात की रंगभरी होली

गुजरात में होली को रंगभरी होली के रूप में मनाया जाता है, जहां लोग पारंपरिक परिधान में गरबा और डांडिया करते हैं। रंगों के साथ नृत्य और संगीत का उत्सव हर किसी को आनंदित कर देता है।

कवर स्टोरी

आज बिरज में होली रे रसिया...

नाथद्वारा, कांकरोली में वल्लभ संप्रदाय की होली

श्री कृष्ण और राधा के प्रेम में रंग कर रंगी हुई गुलाल पुष्टि मार्ग के मंदिरों में उड़ती है। होली की उमंग लिए तब सखा भक्ति में डूबे हुए बृजवासी भक्तजन, चंग की थाप पर गा उठते हैं- आज बिरज में होली रे रसिया..., कृष्ण भक्ति की बाल लीला की उपासना करने का दर्शन वल्लभ संप्रदाय में है। 16वीं शताब्दी में वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित यह वो संप्रदाय है, जिसको वैष्णव संप्रदाय भी कहा जाता है और पुष्टिमार्ग भी जिसका सीधा सा अर्थ होता है उत्कर्ष का मार्ग।

श्री कृष्ण के बाल रूप के वात्सल्य प्रेम उपासना पर आधारित दर्शन सुद्धादैत का सिद्धान्त है, जिसका अर्थ है, भगवान और भक्त के बीच कोई मौलिक अन्तर नहीं। सखा भक्ति का वो मार्ग, जिसमें हर भक्तजन ब्रजवासीजन भगवान का सखा यानी खास मित्र होता है। वल्लभ संप्रदाय वैसे भी कृष्ण के प्रति प्रेम पूर्वक भक्ति पर जोर देता है। वल्लभाचार्य वो भारतीय संत और दार्शनिक थे, जिन्होंने भारत के ब्रज क्षेत्र में वैष्णववाद के कृष्ण केंद्रित पुष्टिमार्ग संप्रदाय की स्थापना व शुद्ध के दर्शन को प्रतिपादित किया और भक्ति आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पुष्टिमार्ग एक हिन्दू दर्शन और साधना का मार्ग है, जो पश्चिमी भारतीय राज्य गुजरात और राजस्थान में लोकप्रिय है। वल्लभ सम्प्रदाय की प्रधानपीठ का मुख्य मंदिर राजस्थान के श्री नाथद्वारा में श्री नाथजी व तृतीय पीठ श्री द्वारकाधीश जी का मंदिर कांकरोली में होने से ब्रज सा सखा भक्ति का रस यहां भी देखने को मिलता हैं। यहां के बाल गोपाल, युवक- युवतियां भी होली और फाग के महीने में मंदिर और नगर में रसिया की थाप पर नाचते गाते नजर आते हैं। विशेष कर पुष्टि मार्ग के मंदिरो में उड़ती गुलाल अबीर में महीनेभर सभी प्रेम रंग में रंगे मिलते हैं। क्या युवा, क्या बुर्जुग सबका मन वृंदावन सा हो जाता है। ऐसा लगता है कि मानो तन मन में ब्रज की कूंज गलियो में राधे- राधे... की गूंज के साथ गाते ढप ढोल, झांझ बजाते रसिया गोपीजन के प्रेम की महक दौड़ रही हो।

ज्यादातर रसिया ब्रज भाषा में गाए जाते है, जिसमें राधा कृष्ण को नायक नायका के रूप में चित्रित किया जाता है। रसिया ब्रज संस्कृति की वो धरोहर है, जिसे ईश्वर भक्ति विशेष कर भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं को दर्शाया जाता है। ब्रज की होली राधा कृष्ण की रास लीला से जोड़कर के आज भी ब्रजवासियों में सखा भक्ति से मनाने की परम्परा अनूठी है। बरसाना और नन्दगांव की लठ्ठ मार होली, वृंदावन की फूलो की होली, मथुरा की गुलाल की होली को देखने देश विदेश के लोग ब्रज आते हैं। देश में सबसे पहले होली का उत्सव बसत पंचमी से ब्रज में ही शुरू होता है और महीनेभर तक मनाया जाता है। ब्रज के रसिया बहुत लोकप्रिय होते है, आज भी वहां पुरानी संस्कृति के अनुरूप रसिया में प्रेम सें देवर भाभी की नोंक - झोंक व रसिया में गाली गाने का चलन भी है। इसी छेड़छाड़, हंसी मजाक के साथ होली उत्सव को मनाया जाता है।

यहां बांके बिहारीजी के मंदिर में ठाकुरजी के विग्रह पर टिका लगा कर होली के इस पर्व का शुभारंभ किया जाता है और रंग पंचमी के दिन समापन किया जाता है। पुष्टिमार्ग के मंदिरों में अष्टछाप कवियों का भी बड़ा महत्व है। वल्लभाचार्य जी के दो पुत्र थे बड़े गोपीनाथ जी और छोटे विट्ठलनाथ जी, वल्लभाचार्य जी के चौरासी शिष्यों के अलावा कई भक्त सेवक व अनुयायी थे। उनके पुत्र विठ्ठलनाथ जी नें अपने चार शिष्यों के साथ मिलकर अष्ठ छाप कवियों का समूह बनाया। अष्ठ छाप के कवियों में सूरदास, कृष्ण दास, परमानन्द दास, कुम्भनदास, नन्द दास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुज दास थे, जिनके लिखे पद आज भी वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरो में हर दर्शन में गाए जाते हैं।

ठाकुरजी की सेवा में अष्ठ छाप के कवियों के पदों को मंगला, ग्वाल, श्रृंगार, राजभोग, उत्थापन, भोग, आरती और शयन के दर्शन में गा कर सेवा का भाव प्रकट किया जाता है। वल्लभ कुल की मुख्य सात पीठ है, जिसे सतघरा के नाम से जाना है और इनके सात मंदिर है जो श्री नाथजी नाथद्वारा, द्वारकाधीश कांकरोली, मदन मोहन जी कामा भरतपुर, मथुराधीश जी कोटा राजस्थान में और गोकुलनाथ जी मंदिर गोकुल उत्तरप्रदेश तथा बालकृष्ण मंदिर सूरत गुजरात में है।

जहां अष्ठ छाप के कवियों के पद नित्य दर्शन में गाए जाते हैं और अन्य देश-विदेश में बने वल्लभ संप्रदाय के मंदिरों में भी इसी परंपरा का निर्वाह किया जाता है। होली को इन मंदिरों में एक उत्सव के रूप में मनाया है, जिसमें रासलीला, रसिया लांगूरिया गायन शैली से देश विदेश में प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया जाता है। भारतीय दर्शन और संस्कृति में होली को अलग अलग प्रांतो और जाति समाज और संप्रदाय में अलग अलग कारणों से भी मनाने की परम्परा रही है।

जब बंसत ऋतु का स्वागत करते हुए होली का त्योहार आता है, तो प्रकृति में उल्लास छा जाता है। पलाश के फूल खिल उठते हैं। चारों और रस बरसने लग जाता है। हिन्दू व सनातन धर्म की मान्यता अनुसार अलग अलग कथा में होली पर्व का महत्व बताया गया है। हिरण्यकश्यपु के कहने पर होलिका प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी गोद में बैठाकर आग में प्रवेश कर गई, किंतु भगवान विष्णु की कृपा से तब भी भक्त प्रह्लाद बच गया और होलिका जल गई। तभी से बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन होने लगा और ये त्योहार मनाया जाने लगा। कामदेव की पत्नी रति को अपने पति के पुनर्जीवन का वरदान और शिवजी का पार्वती से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने की खुशी में देवताओं ने इस दिन उत्सव की तरह मनाया। यह दिन फाल्गुन पूर्णिमा का था। इस प्रसंग के आधार पर काम की भावना को प्रतीकात्मक रूप से जलाकर सच्चे प्रेम की विजय का उत्सव मनाया जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव जब पहली बार मां पार्वती को काशी लेकर आए थे। भोलेनाथ के भक्तों ने अबीर, गुलाल और रंग बिरंगे फूलों से माता पार्वती का स्वागत किया। इसलिए हर साल काशी में रंगभरी एकादशी के दिन होली मनाने की परंपरा चली आ रही है। बुंदेलखंड में फाग उत्सव के रूप में होली पर्व मनाने की मान्यता है। कहा जाता है कि माता जानकी, वाल्मिकीजी के आश्रम में रहते थी, जो इसी बुंदेलखण्ड में था। लव कुश का जन्म यही हुआ, तब यहां की महिलाओं ने बधाई गाई। इसीलिए यहां माता जानकी को केंद्रित मानकर यह पर्व मनाया जाता है और रंग पंचमी के दिन विशाल मेला लगता है। माता जानकी के द्वारा दिए वरदान की वजह से यह परम्परा आज भी चल रही है।

कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक होली का पर्व किसी ना किसी रूप में मनाया जाता है। वैसे भी भारतवर्ष सारी दुनिया में त्यौहारों के देश के नाम जाना पहचाना जाता है। विविधता में एकता का परिचय देता हमारा यह देश अपनी संस्कृति, अपने तीज त्योहारों की वजह से दुनिया में विशिष्ठ स्थान बनाए हुए हैं। हर कोस पर त्योहारों को मनाने के तौर तरीके बदलने के बावजूद सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी इसे आगे बढ़ाने में हम लोग कामयाब रहे हैं।

आधुनिक युग में भी हम अपने संस्कृति को बहु आयामी बना कर प्रयोगधर्मी रहते हुए विज्ञान और आध्यात्म का सन्तुलन इन्हीं त्योहारों की वजह से बना सके हैं। प्यार मुहब्बत और अपनेपन के ये पर्व रिश्तों को मजबूत करने में भी पूर्णरूप से सहयोगी बने हैं। हमारे पूर्वजों द्वारा बनाई गई है। ये विरासत ही हमें विश्व गुरु का दर्जा देती आई है और युगों युगों तक देती रहेगी।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
कवि एवं साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद
मो. 94146-21730

A Thoughtful Selection of School!

Over the years during my professional journey I have met thousands of parents and specially those who were looking for a school to admit their child either first time or switching from one school to other, I got a chance to interact. I always asked them what they were expecting from school and honestly 80-90% had a common response "GOOD EDUCATION". Yes, you are correct, they all had a great answer but ohhh… they meant only GOOD GRADES decorated in the grade card as answer and had no idea what was the actual definition of "GOOD EDUCATION" while the actual answer lies in the depth of these two words and our own understanding only plays an important role here.

I understand it this way that looking at beautiful roses we see, is the end result however the right environment, enough opportunity, required fertilizer, watering and timely care is something which makes the plant get us beautiful desired roses. And I am sure you got my point. Schooling is a journey where children grow day by day, and they come to a final shape by the end of this journey but only by fulfilling the right amount of the needs.

Now our focus which is on getting beautiful roses at the end without taking care of the conditions, capacity, environment, care etc during the entire year results in disappointment and we see the rose either is not fully bloomed or having a few petals and of course we are not satisfied with such flowers. Therefore the focus should be redirected from what we want to how we get. Let's understand what we want and how to get-

What should a parent of Foundational Years children i.e. age group 3 to 7-

Note : I am considering age 3 years onwards as I personally do not support any kind of school for kids with any excuse. At this time child needs the mother most & of course the family environment.

So the parents of 3-7 years should visit the classrooms, meet children and the teacher of the class. They should discuss the day of school, plan of the day to find the opportunities for their kid to bloom at his/her fullest. What does a kid of this age need and you should observe-

- Look for nurturing environment.
- Emotional security
- Hands on learning
- Teacher's interaction
- Engaging and age appropriate environment
- Parental involvement
- Equal opportunities

For those who are changing the school, for any reason should first –

- Define their why over this switching (Academic gaps, environment, bullying, distance, participations, growth etc)
- New school should align with their child's strengths, interests and future aspirations.
- A school's quality is defined by the personalized attention and not the big number.
- Ensure if the school's philosophy matches their expectations of holistic development.
- Remember, the best school is the one where your child can get his/her part of attention, opportunities and grow holistically.
- Also note when you are selecting one school, some parents are leaving from that school too so better to identify our own needs.

The biggest missing factor is that parents rarely take the time to sit with themselves and reflect on the what, why, and how before selecting a school. Instead, they simply follow the crowd. I've often heard fathers proudly say they don't have time for their own children—the irony being, they are the very ones responsible for shaping their future.

Be wise, be thoughtful it's not just an admission and a school but the entire life of your child and both you and school plays equally important part.

Wish you a great learning journey ahead.

Manisha Lashkari
Principal, Career Point World School, Jodhpur

होली व्यंग्य

होली वाले मास्टर जी

होश संभालने के बाद होली पहला त्योहार था जो दिल से खेलना शुरू किया। जब जिसे चाहा रंग दिया। जिससे दुश्मनी निकालनी हो उसे होली पर देख लिया। जिससे मुहब्बत की उससे जबरदस्ती होली पर गले मिल लिए। झम्मन के नाम से गांव में दबदबा था, उसमें हर कोई दबा-दबा नज़र आता। खुरापात ऐसी कि कोई कल्पना नहीं कर पाता। होली हो या न हो पता नहीं कब किसकी खटिया खड़ी हो जाए। होली पर रात में खटिया स्वाह हो जाए।

होली पर पान वाले चच्चा कत्था छुपाकर रख देते। सबसे पहले देव को चढ़ावा चढ़ाने की भांति झम्मन के पांच अलग रख देते, जिससे शाम तक उनकी दूकान सही सलामत चलती रहती। हुड़दंगी का आलम यह था कि पंसारी पहले ही हर रंग की पुड़िया बनाकर अलग से रख देता। झम्मन को देख हर कोई ऐसे सर झुकाकर गुलाल लगवा लेता जैसे गऊ माता खड़ी हो। बड़ा हुआ तो झम्मन ने पैर छू लिए, छोटा हुआ तो आशीर्वाद का धप्प पींठ पर धर दिया।

झम्मन की शरारतों से मां-बाप चालीसा पढ-पढ़कर दिन गुजार रहे थे। उम्मीद थी बेटा कुछ कर गुजरेगा, यह उम्मीद नहीं थी कि बेटा भूत बनेगा और हमें चालीसा पढ़नी पढ़ेगी। शेर को सवा तो मिल ही जाता है, वक्त-वक्त की बात है।

गांव के स्कूल में नए गणित के मास्टर जी का आगमन हुआ। गणित की तरह मास्टर भी समझ में नहीं आ रहे थे। ज्यादा तीन पांच करते तो क्लास से नो दौ ग्यारह कर देते। घर पर आरती उतारी जाती सो अलग। पुराने मास्टर स्कूल की बात स्कूल में समाप्त कर देते। नये मास्टर जी ने घर क्या गांव नहीं छोड़ा। जरा बात हुई पूरे गांव में बरसाती कीचड़ की तरह फैला दी जाती और फिर हर कोई उसमें छपाक-छपाक चलता। मास्टर जी ने मकान किराये पर भी लिया तो चैपाल के पास, जिससे हर बात मालूम हो और अपनी बात चैपाल पर पहुंचा सकें।

होली ऐसा त्योहार जिसमें सम्मान भी मिलता और दण्ड भी। होली पर मास्टर जी के लिए मास्टर प्लान बनाया गया । लेकिन समस्या यह कि शेर के गले में घंटा कौन बांधे। सभी की हालत खराब थी। ऐसा कोई न था जो मास्टर जी के हत्थे न चढ़ा न हो और उसकी आरती न उतरी हो। जिसकी नहीं उतरी वे दूसरों की आरती देख घबरा चुके थे। घबराहट क्यों न हो, मास्टर जी के रुआब में उनकी तलवार कट मूंछे, प्रेसबंद कपड़े, जूतों पर पॉलिस और हाथ में कनेर की संटी और अंग्रेजी का धांय-धांय गोलियों की तरह दागना। ऐसा लगता, पता नहीं किस तानाशाह के यहां जन्म हुआ। गणित के मास्टर जी के नाम से बच्चे नींद में बड़बड़ाते। पहाड़े बोलकर रात में सुनाते।

झम्मन चाहे कितनी खुरापात कर ले, लेकिन किसी का अपमान नहीं कर सकता। इसीलिए सब दिल से प्यार करते थे। नये मास्टर जी खौफ झम्मन को भी था। डर ये था कि अभी तक जमी जमाई दूकान कहीं बंद न हो जाए, आखिर झम्मन ने सोचा जहां सत्यानाश वहां सवा सत्यानाश।

होली की सुबह चैपाल पर सभी को इकट्ठा किया। पंसारी की दूकान से अपना हिस्सा लिया, दो-चार को साथ लिया। धीरे-धीरे कांरवा बढ़ता गया। दो के चार और चार के आठ होते गए। अब झम्मन ने गणित के मास्टर जी का दरवाजा खटखटाया। मास्टर जी बड़े रुतबे से कुर्ता पाजामा में निकले। भीड़ देखे और तम-तमा गये। गरजे-बरसे, गणित की भाषा में सबको समझाया। लेकिन वानर सेना के आगे किसकी चलती है जो उनकी चलती। उनको सबने कंधे पर उठाया और फिर गुलाल ही गुलाल से सराबोर कर दिया।

मास्टरजी ने जोर का ठहाका लगाया, सभी चैंक गए। मास्टर जी बोले अरे बच्चों मुझ नीचे तो उतारो। मैं भी तुम्हारा इंतजार कर रहा था, लो अभी तुम्हारे लिए मिठाई और सेव का इंतजाम किया है, मैं लेकर आता हूं। सभी अवाक थे, पाषाण हृदय को पिघलते देख।

मास्टर जी छत पर गए और तीन बाल्टियों में घुला रंग बंच्चों पर बारी-बारी से उड़ेल दिया। सब सोच में थे, जो इतना कठोर दिखाई देता है इतना कोमल होगा? झम्मन ने मास्टर जी की जय बोली। कुछ ही दिनों में मास्टर जी का असली नाम तो सब भूल गए और नया नाम पड़ गया 'नारियल वाले मास्टर जी, ऊपर से कठोर, भीतर से नरम।'

सुनील जैन 'राही'

वरिष्ठ व्यंग्यकार, नई दिल्ली

मो. 9810 960 285

धमाल मचा रही होलिकाएं और दंभ में पागल हैं मदान्ध हिरण्यकश्यप, धींगामस्ती कर रही ढूंढा

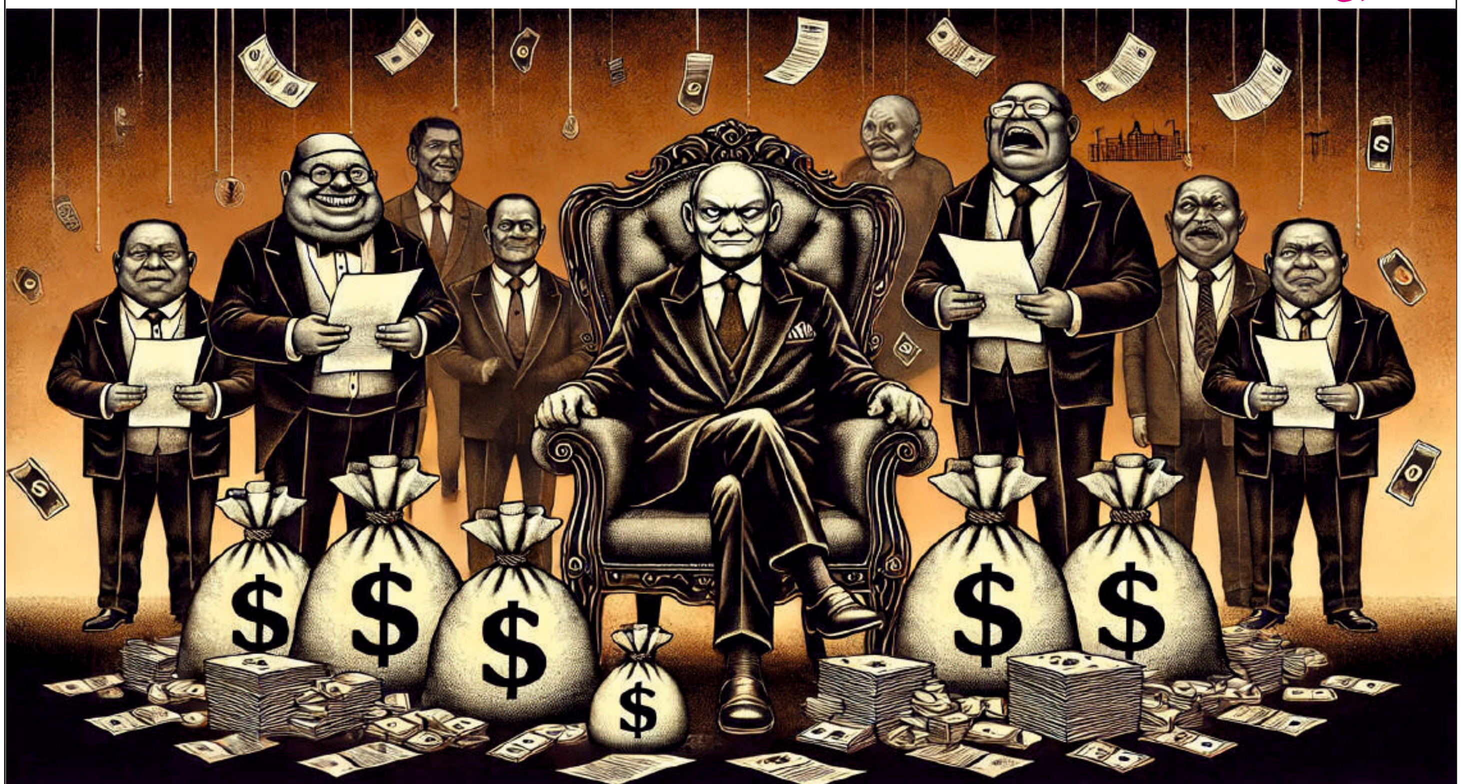

उस जमाने में दानवी संस्कृति के परिचायक हिरण्यकश्यप भी थे और सत्ता के मद भरी फायरप्रूफ होलिकाएं भी। अंधे मोह और मद भरी कुर्सियों का वजूद तब भी था और आज भी है। अन्तर सिर्फ इतना भर हो गया है कि तब एक हिरण्यकश्यप था, एक होलिका थी। आज कई शक्लों और लिबासों में हिरण्यकश्यपों की जमाते हैं, कुर्सी को शाश्वत और अजर-अमर मानने वाली होलिकाएं भिन्न-भिन्न रूपों में हमारे सामने हैं।

इनके रंग अलग-अलग हैं जो होली पर ही नहीं बल्कि पूरे साल भर गिरगिटों को भी छकाते लगते हैं। वो जमाना था जहाँ दैत्यों से लेकर देवताओं तक की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं हुआ करता था। छल-फरेब तो था ही लेकिन इससे भी आगे बढ़कर सच यह था कि जो जैसा है वैसा दीखता भी था और होता भी था। आज सब कुछ उलटा-पुलटा हो चला है। आदमी अन्दर से कुछ और है, बाहर से कुछ और, यहाँ तक कि दाँये से कुछ और है, और बाँये से कुछ और। जो सामान्य हैं वे भी, और असामान्य हैं वे भी, सारे के सारे जाने कितने चेहरों, चाल और चलन से एक साथ नॉन स्टॉप कुलाँचे भरते जा रहे हैं। जाने कितने रंगों के एक साथ घालमेल ने आदमी के मन को इतना बदरंग बना डाला है कि पता ही नहीं चलता कि असली रंग कौन सा है। सच कहें तो आदमी का अपना रंग कहीं खो चला है और आयातित रंगों और रसों के सहारे वह शिखरों को छू लेने का स्वप्न संजोये कभी किसी को पछाड़ देता है, कभी किसी को रुला देता है। इस अंधी दौड़ में उसे न अपनों का बोध है, न परायों का।

हर कोई लगता है जैसे जीवंत अभिनय का महारथी बहुरुपिया ही हो। रोजाना ढेरों किरदारों को जीते हुए, लोगों को मुगालते में रखते हुए आदमी खुद को भी नहीं समझ पा रहा है कि आखिर वह है क्या, और क्या होता जा रहा है।

मोयलों और मच्छरों की तरह चारों तरफ बहुरूपियों और स्वाँगियों का कुंभ बारहों मास चलता रहता है। रोजाना सैकड़ों-हजारों बार झूठ ही झूठ परोसकर गुमराह करने वाले धूर्त्त-मक्कारों की फौज है जो रोजाना आशंकाओं का भविष्य बताती हैं, कयासों के बाजार सजाती है और हर दिन कोई न कोई ऐसा षड्यंत्रा रचती रहती है जिससे कहीं न कहीं कोई न कोई धमाल हो जाए ताकि रोजमर्रा का मसाला मिलता रहे औरों को बदनाम करने का, और मीडिया में लगातार बने रहकर अपनी जंग लगी जिन्दगी को चमकाने का। पॉवर फुल और पॉवरलेस दोनों तरह के आदमी बहुरुपियों को भी उन्नीस ठहराने लगे हैं। सत्ता की होलिकाओं की गोद में एकदम निर्भय बन बैठे उन लोगों के लिए कुर्सियां अभेद्य सुरक्षा कवच ही हो गई हैं जिनमें धंसे रहकर वे जमाने पर कुछ भी सितम ढाने के आदी हो गए हैं।

अपने अस्तित्व को पाने जब आदमी सारे नैतिक मूल्यों और आदर्शों को स्वाहा करते हुए आगे बढ़ने का भ्रम पाल लेता है तब उसके लिए मनुष्य होने का बोध जगने का कभी प्रश्न ही पैदा नहीं होता। कालिया की तरह महाविषैले फुफकारू व्यवस्था की यमुना को साफ करने की दुहाई देते हुए डेढ़-दो दशक से इन्द्रप्रस्थियों को गुमराह कर चुके हैं। अन्ना के गन्ने दारू के नाम पर दलाली का दावानल भभका गए, उसकी आग दशक तक भी बुझने वाली नहीं। कट्टर ईमानदार के साथ सादगी और ईमानदारी झुनझुने लेकर घूमने वाले ढपोड़शंखी मदारी और जमूरे नगाड़े और डमरू बजाने की बादशाहत पा चुके हैं। शीशमहलिया लाक्षागृह की धधकती आग में झुलसे सारे कट्टरों के पास अब नंगई नाच के सिवा कुछ बचा ही नहीं। लोगों ने सब देखा लिया है इन बेशर्मों का।

अपने आस-पास नज़र घुमाएं तो दिखेगा कि लोग कितनी दोहरी-तिहरी या बहुरुपिया जिन्दगी जीते हैं। उच्चाकांक्षाओं के फेर में लगातार मानवीय मूल्यों को रौंदते हुए आगे बढ़ते हुए दीखने वाले इन लोगों के लिए भ्रम में जीना और भ्रम फैलाते हुए आगे निकल जाना ही उनका एकमेव जीवन लक्ष्य है। इन लोगों के हर कर्म और व्यवहार में साफ झलकता है दिखावा। कहते कुछ हैं, करते कुछ और होता है कुछ और। षड़यंत्रों और फरेब की बुनियाद पर टिके इन लोगों की सारी खिड़कियाँ और दरवाजे अन्दर की ओर ही खुलते हैं। किसी जमाने में मोहब्बत की दुकान चलाने वाले दिवालिया नौटंकीबाज अब इसका कबाड़ उठा-उठाकर एक से दूसरे राज्य में बेचने घूम रहे हैं। बार-बार लाँच होते हुए विफल रहने वाले अधकचरे बूढऊ भूरी काकी और दादी के नाक वाली बहनिया के साथ काले अंग्रेजों को नचा रहे हैं। उटपटांगिया चेहरे, लम्बी नाक वाले टोपीबाज, टोंटीचोर, घासचोर से लेकर दिन-रात भौंकने वाले प्रवक्ता, नेता और आलू-बैगन, महाकुंभ पर टीका-टिप्पणियां और बकवास करने वाले सारे एक साथ मिलकर पता नहीं किस अजायबघर या पागलखाने का सपना देख रहे हैं।

लगता है कि अब मनोरंजन के लिए इन मसखरों के होते हुए किसी और संसाधन की आवश्यकता नहीं पड़ने वाली। इन्हें कोई सरोकार नहीं जमाने की प्रतिक्रिया का। कुर्सी की होलिकाओं के फायर प्रूफ आवरण ने इन्हें इतना निर्भय बना दिया है कि इनके लिए कुछ भी करना अस्पृश्य नहीं है। जो जिस रंग के लिबास में बैठा है उस रंग की वाह-वाह करते हुए जनमानस को भ्रमित करता हुआ अपने उल्लू सीधा कर रहा है। जनता की आह-कराह कि उसे फिकर है ही कहाँ। और उल्लुओं के पट्ठे अपने आकाओं, बाप-दादाओं पर इतराते हुए स्टन्ट और क्राईम की दुनिया में कूदे पड़े हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से लेकर मोबाइल और टीवी तक हर कहीं कुटिल मुस्कान बिखेरती, पागलों की तरह चिल्लाती और माथे पड़ती होलिकाएं नज़र आ रही हैं, साथ में ढूण्ढा राक्षसियां भी इनका साथ देती दिखने लगी हैं। और हिरण्यकश्यपों का हाल तो रक्तबीज की तरह हो गया है। मुफ्त का खान-पान, हराम का पैसा, भोग-विलास के सारे संसाधन, हर तरह की जायज-नाजायज सेवाएं और आतिथ्य पाने का आकांक्षी मुफ्तखोर और हरामखोर अपने-अपने पालनहारों की सेवा में जुटे गौरवगान कर रहे हैं।

किसम-किसम के पालतू और फालतू श्वानों से लेकर गधे-घोड़े और उल्लू-गिद्ध तक सारे खुश हैं। हर कोई किसी न किसी की माँद में घुसा हुआ सुरक्षित भी है और हर तरह के मजे भी मार रहा है। देश में काले अंग्रेजों की नई नस्ल का प्रसार कांग्रेस घास, अमरबेल, बेशर्मी और जलकुंभी की तरह हो रहा है।

अब बहुत हो चुका है। होलिकाओं को दिया वरदान समाप्त हो चुका है। प्रह्लाद की पुकार अब ताकत पाने लगी है, हर कोने-कोने से आहट आनी शुरू हो गई है, देश के बचे-खुचे हिरण्यकश्यपों, होलिकाओं और ढूंढा राक्षसियों के साथ ही उनकी रिश्तेदार शूर्पणखाओं, पूतनाओं, सुरसाओं आदि सभी को ही चेत जाना चाहिए वरना अब समय करीब आ गया है, कितना कुछ हजम कर चुकने के बाद भी डकार तक नहीं लेने वाला उनका पेट अब ज्यादा दिन सुरक्षित नहीं है। दृढ़ इच्छाशक्ति और जनशक्ति का प्रभाव दिखने लगा है।

इस बार की होली बहुत कुछ कह रही है अपनी आग के बारे में। यह आग अब किसी को छोड़ने वाली नहीं। कोई बच नहीं पाएगा। सब कुछ खाक हो जाएगा इसमें। आगे-आगे देखते जाइयें होता है क्या।

डॉ. दीपक आचार्य
35, महालक्ष्मी चौक, बाँसवाड़ा
मो. 9413306077
dr.deepakaacharya@gmail.com

होली चिंतन

बदल गए होली के मायने और तरीके

होली का त्यौहार बड़ा ही प्यारा और रंगीन होता है। वैसे तो होली सबको बहुत पसंद होती है, लेकिन आज होली के मायने बदल गए हैं। कुछ सालों पहले होली का त्यौहार एक उत्सव के जैसा होता था और यह उत्सव एक महीने पहले से ही गांव- शहरों में शुरू हो जाता था। वक्त के साथ साथ इस त्यौहार ने भी अपने आपको समेट लिया है। आज होली का त्यौहार होता तो है, लेकिन इसमें जो रंगों की बहार और पिचकारी की फुहार अब बहुत कम ही नजर देखने को मिलती हैं।

एक जमाना हुआ करता था जब बच्चे, बूढ़े, युवा, स्त्रियां इस त्यौहार को अपने एक अलग ही ढंग और अंदाज से मनाते हुए नजर आते थे। पूरे गांव व शहर में होली की एक अलग ही तरह की धूम होती थी। एक महीने तक चलने वाला यह त्यौहार लोगों की खुशियों को इजहार करने का होता था। लोग एक दूसरे को रंग लगाकर अपने प्रेम को प्रदर्शित करते थे। सालभर में अगर किसी से भी कोई झगड़ा या बैर भी होता तो इस पावन पर्व में एक दूसरे के रंग लगाकर और गले मिलकर भुला दिया जाता था। जगह-जगह पर होली के गीत गाए जाते थे, युवाओं की अलग-अलग टोलियां मस्त मलंग होकर रसिया गान करते हुए नजर आते थे।

मुझे तुम सिर्फ प्रेम से देखो
अपने चेहरे पर
हंसी मुस्कान बिखेरो,
मन में कोई बैर न रखो
हो सके तो कुछ
मीठी बातें कर लो,
उन पलों को खुल कर जी लो,
जिसमें तुम्हें खुशियां मिले
फिर तुम देखना
ये होली एक दिन के लिए नहीं
सदा के लिए
मेरे चेहरे और
तुम्हारी रूह को
रंगीन बना देगी...

स्त्रियां भी इस त्योहार को अपने एक अलग ही अंदाज से मनाती हुई हर जगह नजर आ जाती थी। वह भी इस होली के त्यौहार में गीत गाती और गांव के युवाओं को अपने गीतों के द्वारा प्यार से गालियां देती, इसमें कोई भी किसी बात का बुरा नहीं मानता और सभी को सम्मान देकर वह भी मुस्कुराता हुआ ही नजर आता था। हास्य परिहास का यह त्यौहार समाज और परिवार में अपनापन और प्यार बढ़ता हुआ ही दिखाई देता था। दूरियां मिटाकर सभी लोग आपस में मिलते हैं और एक साथ खुशियां मनाते, लेकिन वक्त के साथ अब इस त्यौहार में भी अब वह पुरानी बात नजर नहीं आती। यह त्यौहार अपने सीमित दायरे में सिमट कर रह गया है। आज के जमाने में कोई भी व्यक्ति किसी पर भी रंग लगाने से भी कतरने लगा है। वह अपने परिवार में इस त्यौहार को बड़े ही सूक्ष्म तरीके से निभाता है या इसे सिर्फ और सिर्फ एक छुट्टी का दिन मानकर अपने कमरे में बंद होकर या तो टेलीविजन देखता है, या फिर अपने मोबाइल में समय व्यतीत करता है और होली की शुभकामनाएं भी सोशल मीडिया पर देकर इतिश्री कर लेता है। आज के जमाने में वह प्यार, वह मस्करापन बहुत कम देखने को मिलता है। यह त्यौहार नाराजगी और दूरियां मिटाने के लिए मशहूर हुआ करता था, लेकिन आज के जमाने में अगर किसी के रंग भी लगा दिया जाता है तो नाराजगी का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह त्यौहार धीरे-धीरे हर जगह कम होता हुआ दिखाई देता है।

होली एक त्यौहार ही नहीं, बल्कि अपने जीवन को आत्मसात करने का दिन है, जो व्यक्ति को सिखाता है कि अगर जीवन में रंग नहीं है, तो जीवन में कुछ भी नहीं, यह दौलत, इज्जत, शोहरत सिर्फ और सिर्फ सांसारिक मोह माया का एक जरिया है। जीवन में अगर आप खुशी चाहते हैं, तो प्रकृति के सभी रंगों में रंग कर अपने जीवन को उल्लास से भरा जा सकता है और वही जीवन है। इसलिए अगर आप भी रंगों से परहेज रखते हैं, तो इस बार होली को आप एक अलग अंदाज से मनाने के लिए तैयार हो जाइए और रंग को तन से रंगने के साथ साथ अपने मन को भी रंग से रंग डालिए, फिर देखिए आपका जीवन कितना बदलता हुआ आपको ही दिखाई देगा, जिसमें प्रकृति के सारे रंग आपसे जुड़ते हुए नजर आने लगेंगे।

होली की शुभकामनाएं

राहुल दीक्षित 'RD'
साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद
मो. 94610-16726

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड : जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

होली का त्योहार प्राचीन काल से हमारी सनातन संस्कृति का परिचायक रहा है। भगवान श्रीकृष्ण के संग गोपियों की तकरार और मनुहार का भी यह त्योहार है। होली का त्योहार अलग-अलग जगह पर अलग-अलग तरह से मनाया जाता है। ज्यादातर जगह होली रंगों से खेली जाती है, मगर कहीं लठमार होली भी खेली जाती है, तो कहीं जगह गालियां देकर और कहीं चंग बजाकर होली खेलने की परम्पराएं वर्षों पुरानी है।

होली पर सबको अपने मन में दबे उद्‌गार प्रकट करने की छूट मिलती है। कोई भाभी अपने देवर के रंग लगाती है, तो कोई मनचला अपनी पडोसन को इस दिन रंग लगाकर खुश हो जाता है। किसी मित्र से नाराजगी हो तो इस दिन जी भर के रंग लगाकर गुस्सा निकालने का अवसर भी मिल जाता है। गांव में तो गोबर और कीचड़ में डालकर और गधे पर बिठाकर होली खेली जाती है। इस दिन सभी कहते हैं **"बुरा ना मानो होली है..."** अर्थात इस दिन हर परिस्थिति में बुरा तो मान ही नहीं सकते, चाहे सामने वाला होली की आड़ में कपड़े ही फाड़ देता है।

हमारे पुरखो ने यह त्योहार शायद मन की भड़ास निकालने के लिए ही इजाद किया होगा। होली पर सभी को अपनी भावनाएं प्रकट करने का अवसर मिल जाता है, मगर आजकल आम जनता की भावनाएं दबी रह जाती है और सत्ता पर बैठे लोग आम जनता के दर्द से बेखबर रहते हैं। गांव में लोग बहुत सी प्राथमिक सुविधाओं से भी वंचित रहते है। होली के इस अवसर पर अभावग्रस्त लोगों के मन में दबे उद्गार को भी प्रकट करने का मौका मिलना चाहिए। ग्रामीणों को चाहिए कि वे नेताओं और अधिकारियों को अपने गांव में बुलाए और फिर उनके साथ होली खेलनी चाहिए। गांव में नालियों के अभाव में सड़क पर फैले कीचड़ में जनप्रतिनिधियों की टांगे पकड़ डाला जाना चाहिए और फिर कहना चाहिए- **"बुरा न मानो होली है।"**

इसी तरह हर छोटे-छोटे काम में रिश्वत मांगते अधिकारियों पर लठमार होली का उपयोग करना चाहिए और फिर कहना चाहिए कि **"बुरा ना मानो होली है।"** जनता की आवाज को अनसुनी करने वाले जिम्मेदारों को गधे पर बिठाकर गांव में घुमाया जाना चाहिए और फिर जी भर कर उनके कानों में गालियां सुनानी चाहिए, तभी इस होली का सार्थक उपयोग हो सकता है। तब ग्रामीणों के साथ हम भी कहेंगे- **"बुरा ना मानो होली है।"**

विजय शर्मा
खबरां मेवाड़ी, राजसमंद
मो. 94142-39648

फागुन का माह

फागुन का माह
प्रेम की छाह
बसंत की ऋतु
फूलों भरी राह

रंग रंग जाना
गुलाल का लगाना
स्नेह का रंग
रग रग में समाना

पिचकारी में पानी
नेह की कहानी
जन जन भींगा हैं
बचपन या जवानी

मन से मन की बात
सुबह हो या सांझ
अंग अंग रंगा हैं
रोम रोम गात

कृष्ण बने राधा
राधा बनी कृष्ण
दोनों बीना रिश्ता
लगता हैं आधा

मनीष नंदवाना
'चित्रकार'
राजनगर, राजसमंद
मो. 9460370192

राजसमंद जिले की
खबरों से अपडेट रहने
के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

रंगिली होली

रंग की बहार ले आई है होली
खुशियां अपार लाई है होली।
उस बालभक्त प्रहलाद की याद ले आई है होली,
भारतीय संस्कृति की याद दिलाने आई है होली
भक्त को भगवान से मिलाने आई है होली,
पाप को पुण्य में बदलने आई है होली।।
रंग की बहार ले आई है होली
खुशियां अपार लाई है होली।
बिछड़ों को मिलाने आई है होली,
परदेसी पिया को घर ले आई है होली,
राधा को श्याम से मिलाने आई है होली,
छूआछूत और ऊंच-नीच के भेदभाव
मिटाने आई है होली।।
रंग की बहार ले आई है होली
खुशियां अपार लाई है होली।
हर खेत खलिहान में बहार लाई है होली,
हर गांव और गलि में खुशियां लाई है होली,
हर अत्याचार पर विजय लाई है होली,
हर बाजार और दुकान में महंगाई लाई है होली।।
रंग की बहार ले आई है होली
खुशियां अपार लाई है होली।
क्या बच्चे और क्या बुढ़े सभी को नचाने आई है
होली,इस मस्त जवानी में रंग लगाने आई है
होली,गरीब को अमीर से मिलाने आई है होली,
पुराने विवादों को भुलाने आई है होली।।
रंग की बहार ले आई है होली
खुशियां अपार लाई है होली।
एक दूजे से प्यार जताने आई है होली,
यार को यार से मिलाने आई है होली,
दुश्मन को दोस्त बनाने आई है होली,
प्रीतम को प्रिया से मिलाने आई है होली।
रंग की बहार ले आई है होली।
खुशियां अपार लाई है होली।।

बख्तावरसिंह चुंडावत
'प्रीतम'
साहित्यकार व शिक्षक
आमेट, राजसमंद
मो. 9413287301

क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे

अवनि-अंबर मन के अंदर
हर साँस तुम्हारे होने का
क्यों लगता अनंत विस्तार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

मेघों के रंगों में रंगकर
रूप पाश से वीचि भंग कर
हवा में अंगराग भरकर
तुम मेरे मानस के तट पर
छवि उकेरते हो प्रतिपल
क्यों लगता तेरा आकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

जो कहा रुक-रुक पवन ने
जो कहा झुक झुक गगन ने
कुछ कहा नीरव स्वन ने
कुछ कहा उड़ती अगन ने
हर स्वप्न तेरा भाव बंध है
क्यों बींधना है, स्वीकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

समीर में उर का प्रकंपन
नेह में स्वर लहरी स्पंदन
राह बन गए, जैसे वन चंदन
अश्रु में भी उजला निमंत्रण
बिन माँगे तुमने दे डाला
क्यों स्निग्ध का पारावार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

रोके न रुके जीवन की आस
बढ़ती जाती अब संचित प्यास
पल भर न मिले कोई अवकाश
रचने को चले हम-तुम इतिहास
क्षण में सारे अभिमान वार
क्यों शांत,अविराम पुकार मुझे
क्यों तुमसे न हो प्यार मुझे?

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद
साहित्यकार
राजवंशी नगर,
पटना 800023 (बिहार)

व्यंग्य

लौट के वापस घर को आए

सचिवालय क्या होता है मुझे मालूम नहीं था, कभी गया ही नहीं था। अभी तक ऐसी किसी भी जगह। जाने को तो मैं किसी कत्लगाह भी नहीं गया, मगर नाम से ही पता चलता है कि वहां क्या होता होगा। सचिवालय शब्द से समझ नहीं सकते कि वो क्या बला है। जब हमारे नगर में सचिवालय भवन बना, तब लगा कि वहां सरकार के सभी विभागों के दफ्तर साथ साथ होंगे, तो जनता को आसानी होती होगी। काम तुरंत हो जाते होंगे। वहां कुछ पढ़े लिखे सभ्य लोग बैठे होंगे, जनसेवा करने का अपना दायित्व निभाने के लिए। मगर देखा वहां तो अलग ही दृश्य था। जानवरों की तरह जनता कतारों में छटपटा रही थी और सरकारी बाबू इस तरह पेश आ रहे थे, जैसे राजशाही में कोड़े बरसाए जाते थे। सरकारी कानून का डंडा चल रहा था और लोगों को कराहते देख कर्मचारी अधिकारी आनंद ले रहे थे, उन्हें मज़ा आ रहा था।

कुर्सियों पर, मेज़ पर और अलमारी में रखी फाईलों पर बेबस इंसानों के खून के छींटे साफ नज़र आ रहे थे। कुछ लोग इंसानों का लहू इस तरह पी रहे थे, जैसे सर्दी के मौसम में धूप में गर्म चाय - काफी का लुत्फ़ उठा रहे हों। लोग चीख रहे थे चिल्ला रहे थे मगर प्रशासन नाम का पत्थर का देवता बेपरवाह था। उस पर रत्तीभर भी असर नहीं हो रहा था। लगता है वो अंधा भी था और बहरा भी। मैं डर गया था, वहां से बचकर भाग निकलना चाहता था, लेकिन उस भूल भुलैया से निकलने का रास्ता ही नहीं मिल सका था। तब मुझे बचपन में नानी की सुनाई कहानी याद आई थी, जिसमें राजकुमारी राक्षसों के किले में फंस जाती है और छटपटाती है आज़ाद होने के लिए। मगर उसकी तरह मेरा कोई राजकुमार नहीं था, जो आकर बचाता मुझे। मैं उन राक्षसों से फरियाद करने, दया की भीख मांगने के सिवा कुछ नहीं कर सकता था।

मुझे नज़र आया एक दरवाज़ा, जिस पर बजट व अर्थव्यवस्था का बोर्ड टंगा था। सरकारी लोग उसमें से कहीं जा रहे थे। उस पर लिखा हुआ था आम जनता का जाना मना है, मगर मैं परेशानी और घबराहट में देख नहीं सका और उधर चला आया था। मैंने देखा वहां से एक नदी बहती हुई निकल रही थी और दूर बहुत दूर राजधानी की तरफ जा रही थी। आम जनता का जो लहू सचिवालय के कमरों के फर्श पर बिखरा हुआ था, वो धीरे धीरे बहता हुआ उस नदी में आकर पैसे चांदी सोने में बदल जाता था। उसी से बंगले फार्म हाउस नेताओं के बनाए जा रहे थे। इस जादू के खेल को वहां लोकतंत्र नाम दिया जा रहा था। उस नदी के एक तरफ स्वर्ग जैसी दुनिया बसी हुई थी। नेत अफसर, धनवान लोग जिसमें सब सुख सुविधा पाकर रहते थे, तो उस पार नदी के दूसरी तरफ नर्क का मंज़र था, जहां तीन चौथाई देश की जनता मर मर कर जीने को विवश थी। बता रहे थे हर पांच साल बाद चुनाव रूपी पुल बनाकर नेता आते हैं, जनता के पास और वादा करते हैं कि बहुत जल्द आपके लिए भी स्वर्ग का निर्माण किया जाएगा। झूठे सपने दिखला कर जनादेश लेकर वापस चले जाते हैं अपने स्वर्ग का आनंद लेने को।

सचिवालय की सबसे ऊपरी मंज़िल बेहद खास लोगों के लिए आरक्षित थी। उसके प्रमुख द्वार पर कड़ा पहरा था और एक बड़ा सा ताला उस पर लगाया हुआ था। सूत्रों से ज्ञात हुआ कि उसमें आज़ादी नाम की मूल्यवान वस्तु बंद कर रखी गई थी, जिसके दर्शन केवल वीआईपी लोग ही कर सकते थे। कभी कभी उधर से अफवाह की तरह से जानकारी मिलती थी कि आज़ादी

की दशा शोचनीय है, लेकिन हर बार सरकार और सचिवालय खंडन करते थे और कहते थे, वो ठीक ठाक है, बल्कि पहले से स्वस्थ है।

हर वर्ष जश्न मनाते थे और सरकारी समारोह आयोजित कर बताते रहते थे कि आज़ादी इतने वर्ष की हो गई है। मैंने वहां सुरक्षा में तैनात कर्मियों से विनती की थी कि मुझे दूर से ही अपनी आज़ादी की देवी को देख लेने दो, मगर उन्होंने इंकार कर दिया था और मुझसे कहा था तुम सीधे सादे आम आदमी लगते हो, गलती से यहां आ गए हो, चुपचाप वापस चले जाओ वर्ना कोई देशद्रोह का झूठा इल्ज़ाम लगाकर बेमौत मारे जाओगे। तुम्हें नहीं पता कि लोकतंत्र में आम आदमी को आज़ादी को सच में क्या सपने में देखना तक प्रतिबंधित है। हां अगर तुम भी नेता या अफसर बन जाओ तो आज़ादी को देख ही नहीं सकते, बल्कि उसके साथ कोई खेल भी खेल सकते हो। तब तुम्हें छूट होगी जो चाहे करने की।

किसी तरह उस इमारत से बाहर आया था और उसके पिछले हिस्से में पहुंच गया था। देखा सभी दल के नेता वहां वोटों की राजनीति का सबक पढ़ रहे थे। जाति धर्म के नाम पर जनता को मूर्ख बनाने और लाशों पर सत्ता का गंदा खेल खेलने का पाठ पढ़ाया जा रहा था। चुनाव में जीत कर इंसानों की खोपड़ियों को फूलमाला बना गले में पहन इतरा रहे थे। कल तक चुनाव में दुश्मन की तरह लड़ने वाले सहयोगी बन गए थे। इक दूजे को गले लगा बधाई दे रहे थे। नैतिकता की बात करने वालों का अनैतिक गठबंधन हो गया था, विरोधी सहयोगी बन गए थे।

दोनों को वोट देने वाली जनता ठगी सी खड़ी थी। अब अगले पांच साल इनकी बंधक बन चुकी थी। उसे अभी भी नर्क में ही रहना है और जब भी सचिवालय की तरफ आना पड़े, उसे वही सब झेलना है। मैं भटकते भटकते सचिवालय के सामने पहुंच ही गया था। भाग कर अपने घर वापस आ गया हूं और कसम उठा ली है। फिर कभी उधर नहीं जाने की। जान बची तो लाखों पाए। आप सभी मित्रों को आवश्यकता हो तो मुझे बताएं, ताकि आपको "शून्यकाल का आलाप" पुस्तक उपलब्ध कराई जा सके। लिंक भेज रहा हूं, मंगवा सकते हैं।

डॉ. लोक सेतिया

वरिष्ठ व्यंग्यकार

फ़तेहाबाद, हरियाणा

मो. 9992040688

होली के रंगरंगीले 2 मस्ताने

पन्या खोबा व मांगलीया दा

मेरे गांव कांकरोली में कई तरह की अजीब अजीब विभुतियों ने जन्म लिया और अपनी यादें छोड दुनिया को अलविदा कह गये। जिस तरह गणगौर के दो दिवाने स्व. गोटुलाल जी व स्व. देवीलाल जी के बारे में हम पिछले अंको में आपको बता चुके हैं आज हम होली के शुभ अवसर पर होली के दो रंगीले मस्तानो के बारे में उनकी बातें बताने जा रहे हैं।

श्री पन्नालाल जी के पूर्खे पास ही के गांव पिपलांत्री से आकर कांकरोली में रहने लगे थे। स्व. श्री पन्नालालजी का जन्म कहां हुआ ? क्या शिक्षा दीक्षा ली ? उनके जन्म की क्या तारीख या सन् था ? उनके कोई औलाद भी नहीं हुई। दूर की रिश्तेदारी के लोगों ने न उनके फोटो के बारे में जानकारी दी और न और कुछ बताया। यही हाल दूसरे मस्ताने स्व. श्री मंगलदास वैष्णव का है। उसके बारे में भी कोई जानकारी अथक प्रयासों के बाद भी मैं जुटा नहीं पाया, लेकिन उन दोनों ही मस्तानों को मैंने बचपन से ही देखता आया था और जो कुछ उनके बारे में देखा, सुना वह बताने जा रहा हूं।

पन्नालाल जी की कहानी

श्री पन्नालाल जी पालीवाल दिखने में तो कद काठी से किसी मजबूत पहलवान की तरह दिखाई देते थे, पर उन्हें पहलवानी करते या झगड़ा फसाद करते कभी किसी ने नहीं देखा। वे मासूम से भोले स्वभाव के व्यक्ति थे, वे अपनी धुन में मस्त मौला की तरह गांव में इधर से उधर घुम घाम कर अपना समय हंसी मजाक करते हुए गुजारा करते थे। उनकी इस व्यवहार से उनके अपने उनसे हमेशा नाराज रहा करते थे। अतः उन्होंने अपने भाई बंधुओं के यहां आना जाना भी बन्द कर दिया था और गांव में ही थोड़ा बहुत कामकाज कर अपना भरण पोषण करते थे। गांव का कोई भी उत्सव हो, वे उसमें बढ़ चढ़कर भाग लिया करते थे। होली पर तो उन्हें पहचानना भी मुश्किल हो जाता था, सुबह से शाम तक रंग में सरोबार हो अजीब अजीब हरकतें कर गांव वालो का मनोरंजन करते रहते थे।

गांव वालो ने देखा एक दिन न जाने कहां से तांगा और न जाने कहां से एक छोटा सा मरियल सा घोड़ा ले आए और तांगा चलाने लगे। उनके खटपट करते तांगे में कोई भूले भटके ही लोग बैठा करते थे। एक दिन श्री द्वारकाधीश मन्दिर में दर्शन करने आए गुजराती दर्शनार्थियों ने उनका तांगा नौ चौकी देखने के लिए किराए पर लिया। वे उन लोगों को अपने तांगे में बिठा नौचौकी ले गए। एक गाइड की तरह उन्होंने नौ-चौकी की सारी खुबियां और इतिहास बताया। फिर अपने तांगे में बिठा कांकरोली के लिए चल पड़े। अभी वे खटीकवाड़ा यानि कलालवाटी तक पहुंचे ही थे कि उन्होंने लगाम खींच तांगा रोक दिया। सवारियां एकाएक तांगा रूकने से बोल पड़ी कि क्या हो गया। इस पर पन्नालाल जी घबराए हुए बोले कि गजब हो गया। उनके घोड़े की पूंछ गिर गई है, मैं अभी लेकर आता हूं और वे तांगा वहीं छोड़ पीछे की और चल पड़े। आधे से एक घंटे तक का समय हो गया, मगर पन्नालाल जी घोड़े की पूंछ लेकर नहीं आए। इस पर सवारियां काफी परेशान हो गई और इधर-उधर देख कानाफूसी करने लगी। इस दौरान सवारियों ने घोड़े की पूंछ देखी, तो पूंछ वाकई कटी हुई थी। यह संयोग ही था की घोड़े की पूंछ पहले से ही कई वर्षों से कटी हुई थी। तभी आस पड़ोस के कई लोग एकत्रित हो गए और हंसते हुए कहने लगे कि अरे भाई हर दो तीन दिन में इसी तरह घोड़े की पूंछ गिर जाती है। देखो वो चबुतरे पर नशे धुत होकर अल मस्त सोया पड़ा है, तांगे वाला। आप घबराएं नहीं, अभी दूसरा तांगा आने वाला है, उसमें बैठकर कांकरोली चले जाना। उनकी ऐसी ही हरकतों से जानकार लोग तो उनके तांगे में नहीं बैठते, लेकिन अनजान लोगों से उनके तांगे का काम चलता रहता था। कभी- कभी तो एक भी सवारी नहीं होती, तो वे किसी पुलिस वाले से जा भिड़ते और कहते कि मुझे थाने में बंद कर दो, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। पुलिस कहती अरे भाई तुमने किया क्या है, कौनसा जुर्म कर दिया है, जो तुम्हें थाने बन्द कर दें। इस पर वे मासूमियत से कहते भूख लगी है साहब, इसलिए थाने में खाना ही मिल ही जाएगा।

एक बार गांव में बाहर से एक पगली औरत कांकरोली में आ गई। वह इधर उधर घुमकर व मांग मांग कर अपना पेट भरती और अजीब अजीब हरकते करती। एक दिन पन्नालाल जी अपना तांगा ले खड़े हुए थे, तो न जाने पगली औरत को क्या सुझा कि दौड़कर पन्नालाल जी के तांगे में जाकर बैठ गई। पन्नालाल जी ने देखा कोई सवारी आई है। तुरन्त बोले कि कहां जाना है स्टेशन, राजनगर, धोइंदा। यह कहते हुए चाबुक घोड़े की पीठ पर मारा, तो तांगा चल पड़ा। एकाएक तांगा चलने पर पगली औरत जोरदार चीखी और हंस पड़ी। पन्नालालजी ने एक दो बार पूछा कि कहां जाना है, मगर वह हंसने लगती। इस पर पन्नालालजी ने पूरा गांव घुमा दिया। फिर क्या था कि पगली औरत अक्सर रोजाना उसके तांगे में आकर बैठ जाती और वे दोनों तांगे में बैठ गांव में घुमने का

आनंद लेते। जब रोजाना पन्नालाल जी उसे सैर कराने लगे, तो गांव के कई लोग यह देखने लगे। इस पर कुछ शरारती लोग थे, जिन्होंने भोले भाले पन्नालाल जी के दिमाग में यह बात भर दी कि तुम इस पगली औरत से शादी कर लो। वैसे भी तुम्हारी उम्र काफी हो चुकी है। बुढापे में तुम्हारा साथ कौन देगा। इस पर पन्नालालजी ने पगली औरत से शादी करने का निर्णय ले लिया। फिर किसी से सलाह ली, तो जानकर ने एसडीएम ऑफिस जाकर कोर्ट मैरिज करने की बात कही। इस पर पन्नालाल जी उसे अपने तांगे में बिठा एसडीएम कोर्ट पहुंच गए और एसडीओ साहब से मिलने के लिए कार्मिकों से मिले। इस पर वहां पर कर्मचारी ने पूछा कि एसडीओ साहब से क्यों मिलना है, तो भोले भाले पन्नालाल ने कहा कि मुझे लव मैरिज करनी है, इस औरत के साथ। यह सुनते ही एसडीएम ऑफिस के सभी कर्मचाारियों में कोतूहल मच गया। कई कर्मचारी एकत्रित हो गए और पन्नालालजी से बातें करते हुए मजे लेने लगे। तभी एसडीओ साहब आ गए, तो सभी खामोश हो गए। इस पर पन्नालाल जी बोल पड़े कि हम लव मैरिज करना चाहते हैं। इस पर एसडीएम ने पन्नालाल और उस पगली को सरसरी निगाहों से देखा और बोले कि यह कोर्ट मैरिज का ऑफिस नहीं है। इतने में पगली खिलखिलाकर जोर जोर से हंसने लगी और अजीब हरकते करने लगी। इस पर एसडीओ ने कहा कि अरे यह औरत तो पागल है, पहले इसका डॉक्टरी मुआयना कराकर लाओ, तो पन्नालाल जी फिर तांगे में बैठा कर उसे अस्पताल लेकर पहुंच गए, जहां डॉक्टर के पैर पकड़ मिन्नतें करने लगे कि साहब अच्छा सा लिख कर दे दो। मेरी शादी हो जाएगी, मेरा घर बस जाएगा। जब गांव में इस बात का पता चला तो पूरे गांव में पन्नालाल जी की बाते होने लगी और सब लोग हंस हंस के मजे लेने लगा। कुछ लोग इस घटनाक्रम से पन्नालालजी के भोलेपन पर दुखी भी हुए।

इस शादी की नाकामी के बाद पन्नालाल जी टूट से गए और इसी गम को भुलाने अक्सर एक गाना गुनगुनाते रहते। "हमको भी गम ने मारा तुमको भी गम ने मारा आओ हम इस गम को मार डालें..." झुमते हुए डोलते हुए गाया करते थे और लोगों से कहते मजा देखना है, तो पौने दो रुपए दो, फिर देखो मजा। कई दिनों बाद इस पौने दो रुपए का राज समझ में आया कि उन दिनों पोने दो रुपए में एक पव्वा दारू का मिलता था।

मंगलदास जी की कहानी

श्री मंगलदास वैष्णव कांकरोली की संस्कृति में रमे बसे ऐसे शख्स थे, जो द्वारकाधीश के परम भक्त और मन्दिर की गतिविधियों में हमेशा शरीक रहा करते थे। सुबह शाम झोला लेकर बस्ती की गलियों में छाप तिलक लगा फेरी पर निकल जाते और हर घर से एक कटोरी आटा ले अपना भरण पोषण करते थे। मेरे दोस्त श्री कमलसिंह चन्द्रावत ने बताया कि मैं जब छोटा था, तो मेरे घर भी मांगलीया दा मांगने आए, तो मैंने एक दो कटोरा आटे का भरकर उन्हें देना चाहा, तो उन्होंने लेने से मना कर दिया और मेरी मां और बड़े भाई साहब से बोले ये इतना सारा आटा मैं ले लुंगा, तो मैं दूसरे घरों में क्यों जाऊंगा। आप तो मुझे एक छोटी कटोरी आटा दे दो। दूसरे लोगों के लिए भी तो दान पुण्य का ध्यान रखों, उन्हें पुण्य से क्यों वंचित करते हो। इस छोटे से गांव में गजक का मजा मांगलीया दा ही देते थे। वे बहुत ही अच्छी गजक बनाकर सस्ती दरों पर एक परात में भरकर पूरे गांव में बेचते थे। एक पैसे से लगाकर आना, दो आना में इतनी गजक देते थे कि मजा आ जाए। खस्ता और तिल्ली की खुशबू लिए वैसी गजक आजकल तो देखने को भी नहीं मिलती।

फाल्गुन माह का एक किस्सा यहां के बुजुर्गों से सुनने को मिल जाता है। मांगलीया दा अफीम व भांग के बड़े शौकीन थे। उनके गोवर्धन नामक एक दोस्त हुआ करता था, जो अक्सर ठंडाई घोटा घोटी छानने में उनका साथी हुआ करता था। होली के माह में एक दिन दोनों ही नौचौकी की पाल पर चले गए। नहाने धोने के बाद गोटा गोटी का कार्यकम चल पड़ा। उस रोज उन्होंने खूब छककर ठंडाई छानी और जब भांग सिर चढ़कर बोलने लगी तो मांगलीया दा अपने मित्र गोवर्द्धन जी के साथ वहां से कांकरोली की तरफ चल पड़े। एकाएक मांगलीया दा बोले यार गोवर्द्धन आज तो मजा आ गया। मेरा मन तो आज कर रहा है कि आज मैं नोटन पर चलूं। गोवर्द्धन जी तपाक से बोले कि क्यों नहीं, जरूर चलो। मेरे यार और पांच पांच रुपए के दो नोट निकाल जट से उनके पावों के पास रख दिए और बोले कि लो पांच रुपए के नोट पर रखो अपना पांव और चलो आगे। गोवर्द्धन जी पीछे से नोट उठाते रहते और मांगलीया दा के आगे रखते रहते और इस तरह नोटो पर चलते चलते बहुत ही धीमी गति से आगे बढ़ने लगे। जब नौचौकी के नीचे उतरे तो कुछ बस्ती के लोगों ने जब ये सारा माजरा देखा तो वे भी उनके साथ चलने लगे। बच्चों को भनक लगी तो धक्का मुक्की करते नोट पर चलने का मजा देखते देखते उनके पीछे पीछे चलने लगे। इस तरह एक मजमा सा लग गया। करीब दो तीन घंटे में वे राजनगर के अस्पताल तक ही पहुंच पाए। शाम के करीब 5 बज गए थे, उन दिनों उदयपुर महाराणा का प्रशासन था और राजसमंद जिला था और यहां के जिला कलक्टर साहब, जब अपने निवास स्थान राजनगर की ओर जा रहे थे, तो रास्ते में इतनी भीड़ देखकर रूके और देखने लगे कि एक आदमी नोट पीछे से उठाकर आगे रख रहा है और एक आदमी उस पर पांव रखकर आगे बढ़ रहा है। भीड़ तालियां और सिटियां बजाकर मजा ले रही है। कलक्टर ने तुरन्त अपने अर्दली को राजनगर थाने में भेजा और पुलिस को बुलवा लिया। गोवर्द्धन जी और मांगलीया दा को मुद्रा का अपमान करने के जुर्म में थाने में बन्द करा दिया। रातभर थाने में रहे और सुबह जब भांग उतरी तो माफीनामा लिखकर हाथ जोड़कर व गिड़गिड़ाकर वहां से छुट आए। होली की ऐसी अठखेलियां हर कोई नहीं, कांकरोली की संस्कृति में जन्मा व्यक्ति ही कर सकता है।

वे दोनों ही होली के मस्ताने इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उनकी यादें आज भी होली के दिन उनको जिंदा रखे हुए हैं। उन दोनों ही मस्तानों को हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

साहित्यकार परिषद कांकरोली की गोष्ठी में कथाकार माधव नागदा का सम्मान

राजस्थान साहित्यकार परिषद् का सम्मान समारोह एवं साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन वरिष्ठ साहित्यकार क़मर मेवाड़ी के मुख्य आतिथ्य एवं साहित्यकार एवं समालोचक त्रिलोकी मोहन पुरोहित की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रतिष्ठित कथाकार माधव नागदा को केंद्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित फेस्टिवल ऑफ लेटर्स 2025 में कहानी वाचन कर राजस्थान प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने पर परिषद् द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि क़मर मेवाड़ी ने माधव नागदा का अभिनन्दन करते हुए अपने कविता संग्रह पर डॉ गोपाल शर्मा ष्सहरष् की समीक्षा पढ़ी, जिसमे शर्मा ने मेवाड़ी की कविताओं को सोए हुए आदमी जगाती, झंझोड़ती और बैचेन करने वाली बताया न कि मीठी लोरियां सुनाने वाली। माधव नागदा ने अकादमी समारोह में प्रशंसित कहानी ष् सृजन यात्रा ष् का पाठ किया एवं अकादमी के अपने संस्मरण साझा किए। परिषद् अध्यक्ष पुरोहित ने सम्मानित कथाकार माधव नागदा के कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी उपलब्धि को पूरे क्षेत्र और उनके रचनाकारों की उपलब्धि बताया। साथ ही पुरोहित ने मानवीय रिश्तों की मिठास लिए लघुकथा रघु का वाचन किया, जिसमें दो भिन्न भाषाई व्यक्तियों के प्रगाढ़ होते स्नेह को रेखांकित किया गया है।

गजलकार शेख अब्दुल हमीद ने जमीं पर जब किसी का दिल बेचारा टूट जाता है, फलक पर बस उसी दम इक सितारा टूट जाता है... गजल सुनाकर वाहवाही बटोरी, तो डॉ. नरेंद्र निर्मल ने गांव की गरीब लड़की और उसके गरीब बाप की संघर्ष भरी यात्रा और यू ट्यूब से सफलता मिलने की कहानी का वाचन किया। किशन कबीरा ने क्षणिकाएं प्रस्तुत करने के साथ माधव नागदा के कहानी संग्रह अंजली भर उजास पर अपनी सार्थक समीक्षा प्रस्तुत की। वरिष्ठ साहित्यकार अफज़ल खां अफज़ल ने होली पर प्यार का संदेश देते गीत देश को एक रंग में ढालें, आज हम ऐसा रंग, रंग डाले का पाठ किया, तो नगेंद्र मेहता 'भव्य' ने मोनालिसा कविता सुनाई। संचालक अखिल नागदा ने लघुकथा 'सीख' का वाचन कर एक भाई के हृदय परिवर्तन का मार्मिक चित्रण किया।

भंवर बॉस ने 'तब तुम क्या करोगी', प्रमोद सनाढ्य ने 'सांझ सजी फिर गोधूली की' प्रेम से सजी रचनाएं सुनाकर सबका मन मोह लिया। डॉक्टर राजकुमार खटीक ने कविता 'घर का विचार ऐसे ही टंगा रह जाता है, मेरे हृदय की किसी गुहा में...' सुनाकर मध्यम वर्ग की व्यथा उजागर की। शेख मुहम्मद हनीफ ने गजल 'रंगे उल्फत लगाकर के होली मना...' सुनाकर समां बांध दिया। कार्यक्रम के अंत में परिषद् के प्रसिद्ध शिक्षाविद् व समाजसेविका भगवती राधेश्याम सरावगी के निधन पर श्रद्धांजलि व्यक्त की गई एवं शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

भगवान सब देखी रो

हाथ जोड़- जोड़ न जो,
भगवान रे परसाद चढ़ावें,
दूजा ने नी देवे कीनी,
हंगळो खुद खाई जावें।

कदी मजबूरी मा भगवान रे,
रूपीयां चढ़ाणा पड़ी जावें,
तो सब ऊँ जादा गळयो तको,
नोट होद- होद न चढ़ावे।

कदी मन्दर बानू कोई,
वन्डा जूता लेई जावें,
तो वो वणाऊँ बढ़ूया,
छानेकूं पेर न परो आवें।

मनखां देखावण्यां वो
भीखारी ने दान देवा जावें,
आंधों भीखारी देख न,
दस रा वीस उठाई लावें।

कठी परसाद वँटी रो वे,
तो दौड़ न परो जावें,
दो- तीन दाण हाथ मांड न,
नरोई परसाद परो लावें।

हँसवा री वातं नी हैं, ओ,
मानव रे सभाव मा आवें,
कतरोई कंट्रोल करे बिचारों,
तोई वो रेई नी पावें।
पण हाऊँ वातं नी हैं राजन,
अस्यों नी करणों चावें,

भगवान सब देखी रो, वेई,
एक दाण तो मुस्कराई जावें।
एक दाण तो मुस्कराई जावें।।

राजेन्द्र सनाढ्य राजन
व्याख्याता, राउमावि नमाना
कोठारिया, नाथद्वारा, राजसमंद
मो. 9982980777

धरमसाळा

एक सन्यासी राजा रा महळा में आयो ने वठे हाऊ जगा देख ने पग लाम्बा करी ने सोई गियो। पेरेदार आयो वी वणी सन्यासी ने कीयो के महाराज अठे पग लाम्बा करी ने कई हुता हो? आ काई धरमसाळा हमझी राखी है। सन्यासी केवा लागो आ धरमसाळा ही है। वणी घणो कीयो पण साधु टस रो मस नी वीयो।

वा' सा वात राजा तक पौची। राजा वणी सन्यासी ने कीयो के थणे रूकणो व्हे तो धरमसाळा में रूको, ओ तो राजमहल है। सन्यासी बोल्यो आ धरमसाळा ही है। राजा पूछे ए मोटा मोटा मेळ दिखे हैं, थे अणी ने धरमसाळा किकर केवो हो ?

सन्यासी राजा ने पुच्छयो- धरमसाळा किण ने केवे। राजा बोल्या- जठे जात्री आईन विश्राम लेवे अर आगे चालता रेवे। सन्यासी पूछो के राजाजी ऐ महल कुणी वणवाया। राजा बोल्या के ऐ तो म्हारा दादाजी वणाया। सन्यासी फिर बोला के दादाजी ई में कतरा वरस रीया ? राजा केवे के दस वरस रीया। पछे ? राजा बोल्या के बीस बरस म्हारा पिताजी रीया अर अबे म्हूं रेऊं। सन्यासी केवे के राजाजी आप सदा रेवोगा काई ? अबे राजाजी री आंख्या खुली के म्हारा बाप दादा भी गिया तो म्हने भी जाणो ही है। आ बी ऐक तरूं धरमसाळा ही है। ओ संसार पूरो धरमसाळा ही है। इणमें आपां जसां गंज जात्री आवे अर रूकीने चालता रेवे। ई वास्ते ओ राजमहल बी धरमसाळा ही है।

पुरुषोत्तम 'पल्लव'
वरिष्ठ साहित्यकार
उदयपुर

जयपुर : गुलाबी नगरी के इतिहास की कहानी

जयपुर, जिसे गुलाबी नगरी के नाम से जाना जाता है, भारत के राजस्थान राज्य की राजधानी है। इसकी स्थापना 1727 में आमेर के महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। आमेर किला उनकी पुरानी राजधानी थी, लेकिन बढ़ती जनसंख्या और पानी की कमी के कारण उन्होंने एक नई राजधानी बसाने का निर्णय लिया।

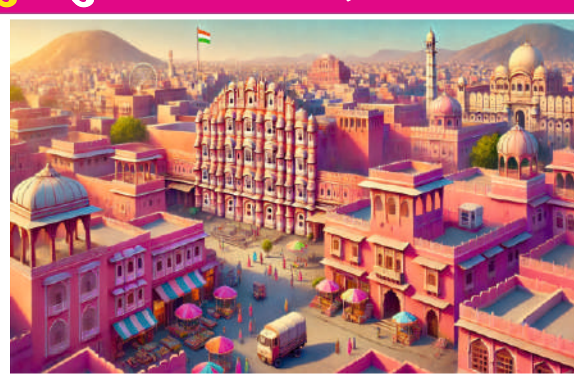

जयपुर का नाम इसके संस्थापक महाराजा सवाई जय सिंह के नाम पर रखा गया। उन्होंने प्रसिद्ध वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य की सहायता से शहर की योजना तैयार की। जयपुर भारत का पहला सुनियोजित शहर है, जिसे वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र के अनुसार बसाया गया। शहर को नौ खंडों में विभाजित किया गया, जिनमें राजमहल, प्रशासनिक भवन, और आम जनता के लिए आवासीय क्षेत्र बनाए गए। 1876 में, प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत में महाराजा राम सिंह ने पूरे शहर को गुलाबी रंग से रंगवा दिया, जो अतिथि सत्कार और शांति का प्रतीक माना जाता है। तभी से इसे 'गुलाबी नगरी' कहा जाने लगा। जयपुर का इतिहास इसके भव्य महलों, किलों और संस्कृति में झलकता है।

आमेर किला, सिटी पैलेस, हवा महल, और जंतर मंतर जैसे ऐतिहासिक स्मारक इसकी समृद्ध विरासत के साक्षी हैं। आज भी जयपुर अपनी शाही परंपराओं, हस्तशिल्प, और राजस्थानी व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है, जो हर वर्ष लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। जयपुर न केवल अपनी ऐतिहासिक धरोहर बल्कि आधुनिक विकास के साथ भी कदमताल कर रहा है। यह शहर भारत के समृद्ध अतीत और उज्ज्वल भविष्य का एक अनूठा संगम है।

सन शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कंप्यूटर कोर्स !

RS-CIT

अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग करें घर बैठे RS-CIT के साथ डिजिटल साक्षर बनें

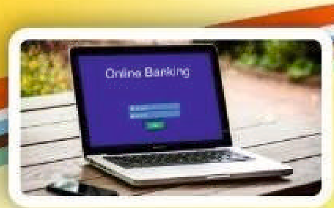

ऑनलाइन बैंकिग की मूलभूत जानकारी तथा लाभकारी उपयोग

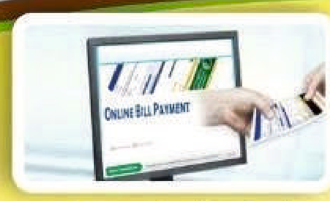

बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल ऑनलाइन जमा कराना

Facebook, Whatsapp और GPS के बारे में जानकारी हासिल करना

बच्चों को शैक्षणिक वेबसाइट की मदद से पढ़ाई कराना

ऑनलाइन शॉपिंग करना

Microsoft Office

MS-Office का व्यावहारिक ज्ञान

RS-CIT कंप्यूटर कोर्स में कैसे लें प्रवेश

1. RKCL की वेबसाइट www.rkcl.in पर प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन उपलब्ध है।
2. आप अपने विवरण के साथ ज्ञान केंद्र का चयन कर आवेदन करें।
3. चयनित ज्ञान केंद्र आपसे फोन पर संपर्क कर आपके आवेदन की पुष्टि कर प्रवेश सुनिश्चित करेगा तथा आपके ऑनलाइन प्रशिक्षण में मदद करेगा।
4. प्रवेश के पश्चात् आपको Login ID तथा Password दिया जाएगा।
5. Login ID तथा Password की मदद से आप ऑनलाइन लर्निंग मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर या RKCL Mobile App पर RS-CIT के ऑडियो–विडियो कंटेंट तथा ई–बुक के माध्यम से अपना प्रशिक्षण प्रारंभ कर सकते है।
6. आप घर बैठे अपने लैपटॉप, डेस्कटॉप या मोबाइल के माध्यम से कोर्स कर सकते है।

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा (राजसमंद)
मो. 96498-13798

फैक्ट्री चौराहा, बस स्टैंड के पास गांवगुड़ा, खमनोर, राजसमंद
मो. 90240 34696

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन